अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

{ किसी भी देश की स्थिति का अंदाजा उस देश की महिलाओं को देख कर लगाया जा सकता है.
-पं. जवाहरलाल नेहरू }

आज 8 मार्च... यानी अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस. पूरी दुनिया आज महिला दिवस हर्षोल्लास के साथ मना रही है. आज बात होगी महिलाओं के अधिकारों की, बराबरी की, समानता के अधिकार की. एक मां, एक बेटी, बहू, पत्नी बनकर घर की पूरी जिम्मेदारी संभालने के साथ ही महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आज हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं. 'लोकमत समाचार' ने नागपुर के विभिन्न क्षेत्रों में अपने-अपने विभागों की कमान संभाल रही महिलाओं से इस उपलक्ष्य में बातचीत की. पेश है विशेष रिपोर्ट...

आग से जूझने की महारत हासिल कर रहीं 13 लड़कियां

खौफ और परिवार से परे चुनौतियों का सामना

वैशाली सिंह, असिस्टेंट डायरेक्टर, एनएफएससी

जेंडर कोई मसला ही नहीं देशसेवा का जज्बा

देश के नागपुर में एकमात्र नेशनल फायर कॉलेज में 13 लड़कियां फायर फायटिंग का प्रशिक्षण ले रही हैं. ये प्रशिक्षण आम नहीं होता बल्कि खतरों से भरा है. कभी अचानक कहीं आग लगाई जाती है और उसे बुझाने उन्हें कहा जाता है. बहुमंजिला इमारत पर चढ़कर घायलों या फंसे हुए लोगों की जान बचाने की ट्रेनिंग के लिए भी उन्हें अपनी जान जोखिम में डालनी पड़ती है. खैर, इस प्रोफेशन को अपनी इच्छा से चुनने के कारण इन लड़कियों में किसी तरह का कोई डर नहीं है बल्कि ये पूरे हौसले के साथ ट्रेनिंग में ही अपना बेहतर प्रदर्शन देने का प्रयास कर रही हैं.

फायर कॉलेज में प्रशिक्षण के दौरान उपस्थित महिला प्रशिक्षणार्थी.

ऑफिसर को लीड कर रही महिला

नागपुर के इस कॉलेज में देश के विभिन्न अंचलों से आने वाले ऑफिसरों को प्रोफेशनल कोर्स में एक महिला ही ट्रेनिंग दे रही है. ये हैं वैशाली सिंह जो यहां कोर्स को-आर्डिनेटर हैं. उन्होंने देश की एक बड़ी कंपनी में चार साल काम किया और वास्तविक आपदा वाली स्थितियों से जूझीं. इसके बाद ही उन्हें एक विश्वस्तरीय सरकारी संस्थान में सेवा का अवसर मिला.

हर पल है महिला होने का गर्व

काम का कोई जेंडर नहीं होता. केवल हमें अपनी ताकत को पहचानना होता है. महिलाएं यदि किसी रोजगार को अपनाती हैं तो उन्हें दोहरी भूमिका अदा करनी होती है. बाहर काम करने के अलावा उन्हें घर की सारी जिम्मेदारियां भी निभानी पड़ती हैं. महिला होने का कभी कोई मलाल नहीं हुआ बल्कि हमेशा गर्व रहा है. अब तक हर संस्थान में ऐसा कोई क्षण नहीं आया जहां बतौर महिला किसी दिक्कत से गुजरना पड़ा हो. मेरे लिए मेरी मां और पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम आदर्श हैं. महिलाओं के लिए बस यही संदेश है कि वे अपने भीतर की ताकत को पहचानें और दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ आगे बढ़ें.

विमला आर., जिलाधिकारी, नागपुर

हमेशा आत्मविश्वास बनाए रखें मदद मांगने से गुरेज न करें

महिला होना अपने आप में ही गर्व की बात है. लेकिन मुझे अपने महिला होने पर तब गर्व हुआ जब मैं मां बनी. मैंने अपनी जिंदगी से बहुत कुछ सीखा है. आज की लड़कियों और महिलाओं को मैं महिला दिवस के उपलक्ष्य में यही संदेश देना चाहूंगी कि वह हमेशा आत्मविश्वास बनाए रखें. साथ ही जिंदगी की हर राह पर चलते समय किसी की भी मदद लेने से कभी गुरेज न करें. मेरे लिए हमेशा से ही मेरे माता और पिता आदर्श रहे हैं. मैं उन्हें अपने शिक्षक के रूप में भी देखती हूं, उन्होंने मुझे हमेशा सपोर्ट किया. मैं इसके लिए खुद को खुशकिस्मत मानती हूं.

अस्वती दोरजे, ज्वाइंट सीपी, नागपुर

सकारात्मक सोच से ही महिलाएं छू सकती हैं बुलंद मुकाम

अपने पैरेंट्स की इकलौती संतान होकर भी उन्होंने मुझे मेरे हर फैसले में पूरा सपोर्ट किया. यूपीएससी करना और पुलिस में आना यह मेरा अपना फैसला था. उन्होंने इसमें भी मेरा साथ दिया. आज की महिला और लड़कियों को मैं यह संदेश देना चाहूंगी कि वह हमेशा सकारात्मक सोच लेकर आगे बढ़ें. यकीन रखिए कि आपकी सकारात्मक सोच ही आपको एक दिन बुलंदी छूने में मददगार साबित होगी. साथ ही मेरे पैरेंट्स ने जो मुझे कहा था वह मैं सभी से कहना चाहूंगी कि किसी भी काम को अधूरा मत छोड़ देना. उसे पूरा करने में खुद को झोंक दो.

भुवनेश्वरी एस., सीईओ, स्मार्ट सिटी

नानी ने मुझ पर विश्वास जताया मैं उस पर खरी उतरी

जब आप पर कोई विश्वास जताता है तो आपकी यह जिम्मेदारी बन जाती है कि आप भी उस पर खरा उतरने के लिए पूरी कोशिश करें. मेरी नानी ने मुझे कहा था कि वह मुझे ऐसे मकाम पर देखना चाहती हैं, जहां पहुंचने पर वह मुझे सैलूट करें. मैंने उसके विश्वास को सच्चाई में बदल डाला. मुझे हर पल यह लगता है कि महिला होना वाकई में गर्व की बात है. मेरे लिए अभिभावक ही हमेशा आदर्श रहे हैं. उन्होंने बहुत ज्यादा सपोर्ट किया. मैं आज की लड़कियों और महिलाओं को यह कहूंगी कि चाहे कुछ भी हो लेकिन सपने देखना न छोड़ें. खुद को हमेशा व्यक्त करते रहिये.

प्राजक्ता लवंगारे-वर्मा
विभागीय आयुक्त, नागपुर

कौशल हासिल करें और योजनाओं का लाभ लें

जिन महिलाओं को खुद का उद्योग स्थापित करना है, ऐसी महिलाओं के लिए शासन की कई योजनाएं हैं. इसके लिए महिलाओं को अपनी क्षमता पहचानने और संबंधित कौशल हासिल करते हुए इनका लाभ लेना चाहिए. विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में उद्योजक बनने की इच्छा रखने वाली महिलाओं को लेकर उन्होंने चर्चा की. विभागीय आयुक्त ने कहा कि केंद्र व राज्य की कई योजनाएं हैं. वर्मा ने कहा केंद्र व राज्य की कई योजनाएं हैं. जिला परिषद, समाज कल्याण विभाग के जरिये इनका क्रियान्वयन किया जाता है. कौशल विकास की भी योजनाएं हैं. लेकिन योजनाओं का लाभ लेने के लिए खुद की तैयारी भी जरूरी है. मेहनत के साथ आर्थिक विषय, मार्केटिंग आदि का ज्ञान जरूरी है. महिलाएं अगर यशस्वी हुईं तो सामाजिक व आर्थिक प्रभाव भी दिखाई देता है.

संबंधित योजनाएं

- **मुद्रा योजना :** प्रधानमंत्री मुद्रा के जरिये राष्ट्रीय बैंकों से ब्यूटी पार्लर, ट्यूशन सेंटर, टेलरिंग यूनिट आदि छोटे रोजगारों के लिए कर्ज दिया जाता है.
- **अन्नपूर्णा योजना :** इस योजना में फूड कैटरिंग उद्योग के लिए महिलाओं को सरकार 50 हजार रुपए तक का कर्ज देती है.
- **सेंट कल्याणी योजना :** सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया द्वारा चलाई जाने वाली इस योजना में महिलाएं खेती, हैंडीक्राफ्ट, भोजन व्यवसाय, कपड़े, कैंटीन, होटल, लाइब्रेरी, एसटीडी जेरॉक्स बूथ के लिए आवेदन कर सकती हैं.

शीतल तेली - उगले, आयुक्त, वस्त्रोद्योग

खूब पढ़ें और अपनी पसंद वाली फील्ड में माहिर बनें

लड़कियां और महिलाएं खूब पढ़ें और अपनी पसंद वाली फील्ड में माहिर बनें. अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें. 2016 में रायगढ़ की कलेक्टर रहते सावित्री नदी का पुल ढहने से 40 लोगों की मृत्यु हो गई थी. इस घटना का बचाव और राहत कार्य बहुत बड़े पैमाने पर चल रहा था. उस समय मेरा बेटा 9 माह का था, पति की पोस्टिंग दूसरे जिले में थी और मुझे अपने काम की व्यस्तता के कारण बेटे को घर पर छोड़कर आना पड़ता था. तब ऐसा लगता था कि काश मैं इस बच्चे की मां नहीं बल्कि पापा होती, तो उसे उसकी मां के पास तो छोड़कर आ सकती थी.

डॉ. माधवी खोड़े-चवरे, आईएएस

खुद की पहचान बनाएं और समाज को नई पहचान दें

महिलाएं खुद की पहचान बनाएं और अपनी पहचान से पूरे समाज को नई पहचान दें. किसी भी महिला के लिए मां बनने का एहसास सबसे खास होता है. महिला होने के कारण पीरियड्स के दौरान टूर्स और ट्रैवल्स करने में कभी-कभी समस्या होती है. मेरी आदर्श मेरी मां पुष्पा खोड़े हैं, जिन्होंने मुझे ईमानदारी, सच्चाई, सहनशीलता और करुणा का महत्व समझाया, जो जीवन के हर पड़ाव पर मेरे लिए काफी फायदेमंद साबित हो रहा है. इसके अलावा महिला शिक्षा की प्रणेता सावित्रीबाई फुले और अहिल्याबाई होलकर भी मेरे लिए आदर्श हैं.

स्नेहा मेढे, एआरटीओ, नागपुर (ग्रामीण)

अपने पैरों पर खड़े हो जाइए और खुद का वजूद बनाइए

लड़कियों को यही संदेश देना चाहूंगी कि पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़े हो जाइए और खुद का एक अलग वजूद बनाइए. जब हम अपना वजूद बना लेते हैं तो सारी परेशानियां अपने आप खत्म हो जाती हैं. महिला होना अपने आप में एक गर्व की बात है और मुझे इसका एहसास हर समय होता है. मुझे अपने जीवन में कभी भी महिला होने के नाते किसी भी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा. मेरे लिए मेरी मां मेरा सबसे बड़ा आदर्श हैं. उनके मार्गदर्शन में मैंने ऊंचाइयां हासिल की है. पग - पग पर उन्होंने मेरा हौसला बढ़ाया है.

डॉ. साधना रायलु, मुख्य वैज्ञानिक, नीरी

उतार-चढ़ाव तो आते रहते हैं, हर हाल में खुद को करें मजबूत

महिलाओं के जीवन में कई उतार-चढ़ाव आते हैं. महिलाएं पारिवारिक हों या प्रोफेशनल अपने आपको सभी परिस्थितियों में मजबूत बनाकर ही आगे बढ़ाना चाहिए. वर्तमान में महिलाओं ने सभी क्षेत्रों में ऊंचा मुकाम हासिल किया है. लेकिन जो महिलाएं आगे बढ़ना चाहती हैं और परिवार या अन्य किसी कारण से ऐसा नहीं कर पातीं, वह खुद के लिए खड़ी हों और अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ें. समाज और परिवार को महिलाओं की तरक्की के लिए उन्हें नियमित रूप से प्रोत्साहित करते रहना चाहिए. इसका निश्चित रूप से भविष्य में फायदा दिखाई देगा.

अत्या कपले, मुख्य वैज्ञानिक, नीरी

केवल महिला सशक्तिकरण की बातें न हों, अमल भी जरूरी

अक्सर महिलाओं को करियर और परिवार के बीच समझौता करना पड़ता है. समाज में महिला सशक्तिकरण की बातें तो की जाती हैं लेकिन कहीं न कहीं अब भी महिलाओं को खुद के लिए फैसला लेने की छूट नहीं है. भारत ही नहीं बल्कि एशिया के दूसरे देशों में भी यही स्थिति है. महिलाएं यदि सक्षम हैं तो उन्हें अपने करियर और परिवार के बीच तालमेल बैठाना बहुत जरूरी होता है. मुझे अपने दोनों परिवारों से सहायता मिली है, जो हर लड़की को मिलना चाहिए. मैं अपनी नानी मां को अपने जीवन का आदर्श मानती हूं, उनसे आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली.